शोध मंथन Vol. XV No.I Jan.-Mar.2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

संथाल परगना में स्वदेशी एवं बहिष्कार आन्दोलन (1905–08 ई0)

प्राप्तिः 10.03.2024
स्वीकृतः 24.03.2024

13

रामानन्द कुमार पासवान
शोधार्थी
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
ईमेलः *ramanandbed@gmail.com*

प्रो० वकुल रस्तोगी
शोध निर्देशक
मेरठ कॉलिज, मेरठ

सारांश

संथाल परगना झारखण्ड राज्य स्थित संथाल बाहुल प्रक्षेत्र है जिसमें वर्तमान में छः जिले देवघर, दुमका, गोड्डा, साहेबगंज पाकुड़ और जामताड़ा स्थित है। 'मध्यकाल' में जंगलतराई नाम से जाना जाने वाला यह क्षेत्र पहाड़िया जन–जातियों का मूल निवास स्थान होने के कारण ब्रिटिश प्रशासकों ने 1832 में इसका नामकरण दामिन–ए–कोह के रूप में कर दिया। किन्तु संथालों के तेज प्रवास एवं बढ़ती आबादी के कारण संथाल विद्रोह के बाद 1856 में इस क्षेत्र को संथाल परगना नाम दिया।

संथाल परगना के जनमानस ने राष्ट्रीय आन्दोलन के लगभग सभी आन्दोलनों में अपना योगदान दिया। बंगाल से सटे होने के कारण बंगाल विभाजन से उत्पन्न स्वदेशी आन्दोलन यहां भी शीघ्र ही फैल गया। संथाल परगना के युवा क्रांतिकारी पंडित शिवराम झा, श्री शशिभूषण राय, पंडित विनोदानन्द झा, पंडित रामराज 'जजवाड़े आदि स्वंदेशी आन्दोलन का अपने–अपने इलाकों में नेतृत्व प्रदान किया, ये तरून–मातृबंधन मुक्ति आन्दोलन का तीव्र प्रसार करने लगे जो स्वदेशी आन्दोलन का ही एक भाग था। यहां के आन्दोलनकारी वारीन्द्र कुमार घोष, कृष्ण कुमार मित्रा, शिशिर कुमार घोष, देवेन्द्र कुमार घोष आदि राष्ट्रीय स्तर के आन्दोलनकारियों से काभी प्रभावित थे और इन्हें राष्ट्रीय नेताओं से काफी समर्थन व सहयोग प्राप्त हुआ।' विनोदानन्द झा एवं पं0 रामराज जजवाडें के नेतृत्व में देवघर में व्यापक रूप में बहिष्कार आंदोलन चलाया गया। विदेशी वस्तुओं का पूर्ण बहिष्कार किया गया सरकारी कार्यालयों डाक रेलवे को बाधा पहुंचायी गईं 'गोल्डन लीग' नामक संस्था ने संथाल परगना में स्वदेशी आन्दोलन को व्यापकता प्रदान की 'युगांतर' नामक समाचार पत्र ने भी इस आन्दोलन को बढ़ाने का काम किया। 'देशेर कथा' पुस्तक ने स्वदेशी आन्दोलन को व्यापक बनाने का काम किया।

मुख्य बिन्दु

गोल्डेन लीग देवघर, युगांतर, देशेर कथा, पं0 बिनोदानन्द झा, सेडिशन कमिटी, वारीन्द घोष।

1905 का वर्ष भारत के लिए ही नहीं वरण झारखण्ड और संथाल परगना के लिए भी राष्ट्रीय आन्दोलन के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण माना जाता है। पहले संथाल–विद्रोह और फिर 1857 का विद्रोह में सक्रिय भागीदारी के बाद संथाल परगना के लोग राष्ट्रीय आन्दोलन की मुख्यधारा से जुड़ गए थे। यद्यपि यह क्षेत्र संथाल बाहुल इलाका था किन्तु राष्ट्रीय आन्दोलन में संथालों के साथ–साथ पहाड़िया व सदानों ने भी आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी निभाई।[2]

20 जुलाई, 1905 को शिमला में बंगाल–विभाजन की घोषणा की गई। लार्ड कर्जन इस समय वायसराय थे तथा बंगाल का लेफ्टिनेंट गवर्नर सर एण्ड्रूज फ्रेजर था। बंगाल विभाजन को जो आधार लार्ड कर्जन द्वारा दिया गया था वह यह था कि इतने बड़े प्रांत पर सुव्यवस्थित ढंग से शासन करना संभव नहीं है। किन्तु वास्तव में ब्रिटिश सरकार का मुख्य उद्देश्य था बंगाल में सांप्रदायिक कलह फैलाना क्योंकि बंगाल क्रांतिकारी गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बन चुका था और हिन्दू व मुस्लिम आन्दोलनकारियों के बीच शानदार एकता कायम थी। 16 अक्टूबर, 1905 को बंगाल विभाजन की योजना लागू कर दी गई। 16 अक्टूबर, 1905 को पूरे बंगाल में 'शोक–दिवस' के रूप में मनाया गया जल्द ही यह आन्दोलन संथाल परगना में भी फैल गया। स्वदेशी के सम्बन्ध में निम्न संकल्प लिया–

''सर्वशक्तिमान भगवान को अपना साक्षी बनाते हुए तथा आने वाली पीढ़ियों के समक्ष हम यह संकल्प करते है कि जहाँ तक संभव होगा हम लोग गृहनिर्मित वस्तुओं का उपयोग करेंगे तथा विदेशी वस्तुओं के उपयोग से दूर रहेंगे। भगवान हमारी सहायता करें।[3]

स्वदेशी आन्दोलन के शुरू होते ही संथाल परगना क्रांतिकारियों और बुद्धिजीवियों का गढ़ बन गया था। संथाल परगना क्षेत्र जहां पहले से ही विद्रोह और क्रांति होते चले आ रहे थे उन्हीं दिनों देवघर के कई प्रतिभाशाली तरूण मातृबंधन मुक्ति के लिए अग्रसर हुए। इस संघर्ष में संथाल परगना के सपूत पंडित शिवराम झा, श्री शशिभूषण राय, पंडित विनोदानन्द झा, पंडित रामराज जजवाड़ें, श्री रामेश्वर लाल सर्राफ आदि शामिल थे।[4]

20वीं सदी के अनुसार संथाल परगना में स्वदेशी आन्दोलन को मजबूती प्रदान करने में राजनारायण बोस वारीन्द्र कुमार घोष, कृष्ण कुमार मित्रा, शिशिर कुमार घोष, हेमेन्द्र कुमार घोष तथा भूपेन्द्र दत्त जैसे बुद्धिजीवी लोग आते हैं। वारीन्द्र कुमार घोष वहां के 'गोल्डन लीग' नामक संस्था के सदस्य थे। यह संस्था विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार एवं स्वदेशी आंदोलन के लिए काम करती थी। देवघर जिले में 'गोल्डन लीग' के द्वारा किये गए बहिष्कार आन्दोलन एवं स्वदेशी आन्दोलन विशेष उल्लेखनीय है जहां पं0 रामराज जजवाड़े एवं पंडित विनोदानन्द झा जैसे युवा आन्दोलनकारियों ने अहम् नेतृत्व प्रदान कर इस आन्दोलन को काफी बढ़ावा दिया।[5]

सेडिशन कमिटी 1918 की रिपोर्ट में उल्लेख मिलता है कि 'युगांतर' का एक मुद्रक पटना से आया हुआ एक बंगाली था। क्रांतिकारी दल के सदस्य देवघर के समीप एक फार्म में या तो गये थे या उसमें काम करते थे। अलीपुर शडयंत्र केश (1907) के अभियुक्तों के मुकद्मों के दरम्यान यह मालूम हुआ कि देवघर में शील–लाज नामक एक मकान में क्रांतिकारियों के प्रशिक्षण शिविर बनाया गया था तथा बम बनाने के लिए किराये पर लिया गया था और वहां ये काम भी होते थे।[6]

यह भी सूचना मिली कि श्री अरविन्द घोष की माँ देवघर से 4 मील पर ग्राम रोहिणी में तारणी प्रसाद का मकान किराया पर लेकर रहा करती थी। तारणी बाबू भागलपुर के एक प्रतिष्ठित वकील थे तथा बंगाल के लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य वारीन्द्र घोष अधिकतर अपनी माँ के साथ ही रहता था। श्री अरविन्द भी वहां कभी–कभी आया करते थे। दोनों भाईयों की गिरफ्तारी के बाद रोहिणी स्थित बंगले की पुलिस ने तलाशी की और वहां कुछ हथियार तथा गोला बारूद प्राप्त किया। इन्हें जमीन के नीचे एवं एक कुएं में छिपाकर रखा गया था।

1906 में कलकत्ता के कांग्रेस अधिवेशन में गरमपंथियों ने चार प्रस्ताव पारित किए थे– स्वदेशी आन्दोलन, बहिष्कार आन्दोलन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति और स्वशासन का प्रचार–प्रसार करना। पंडित सखाराम, गणेश देवस्कर गरम दल के प्रस्तावों से सहमति रखते थे। 26 दिसम्बर, 1907 ई0 को कांग्रेस का 23वां अधिकवेशन सूरत में सम्पन्न हुआ। उग्रवादी दल में प्रत्यक्ष रूप से झगड़ा हो गया। दोनों अपनी–अपनी बातों पर अड़ गए। गरमपंथी इस अधिवेशन में विगत कलकत्ता अधिवेशन में पास गिए गए प्रस्तावों का अनुमोदन चाहते थे। पर ऐसा नहीं हो सका और कांग्रेस का नरम दल एवं गरम दल में विभाजन हो गया। गरम दल के नेता बाल गंगाधर तिलक बिपिन चंद्र पाल और श्री अरविन्द घोष कांग्रेस के विभाजन के पक्ष में नहीं थे। लेकिन फिरोजशाह मेहता के अड़ियल रवैये के चलते अंततः विभाजन हो गया। इस विभाजन से तिलक एवं अरविन्द घोष काफी दुःखी हुए और इसका प्रभाव संथाल परगना में स्वदेशी एवं बहिष्कार आन्दोलन पर भी पड़ा यहां के आन्दोलनकारी भी गरम दल व नरम दल में बंट गए।

गरम दल के नेता सरकारी कार्यालयों में तोड़–फोड़ डाकघरों को लूटना दस्तावेजों को जलाना पुलिस थानों को लूटना रेलवे पटरियों को उखाड़ देना जैसी घटनाओं को अंजाम देने लगे जबकि नरम दल वाले कांग्रेस के मूल सिद्धांतों में बने रहे व अहिंसक तरीकों से बहिष्कार आन्दोलन चलाते रहे जिसमें सरकारी सेवा से त्यागपत्र देना विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना, धरणा देना, हड़ताल आदि गतिविधियां शामिल थे।[7]

देवघर जिले में कई जगह रेल पटरियां उखाड़ दी गई। साहेबगंज व दुमका में डाकघरों को लूट लिए गए स्वदेशी आन्दोलन में संथाल पहाड़िया जनजातियों, देवघर के वैधनाथ मंदिर के पुरोहितों ने भी आन्दोलनकारियों का साथ दिया। जबकि कुछ वर्ग के लोग अंग्रेजी सरकार की सेवा में थे जो अंग्रेजों का साथ दे रहे थे जिससे आन्दोलन प्रभावित भी हुआ।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष सामने आता है कि स्वदेशी एवं बहिष्कार आन्दोलन में संथाल परगना में जन सहभागिता एवं नेतृत्व महत्वपूर्ण रही। प्रारंभ में तो यह आन्दोलन अहिंसात्मक थी किन्तु जल्द ही यह आन्दोलन तोड़–फोड़ करना, धरना देना, जुलूस एवं झड़प जैसी गतिविधियों तक पहुंच गई 1905–06 तक स्वदेशी आन्दोलन के दौरान केवल विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार देशी वस्तुओं के प्रयोग को बढ़ावा देने तक सीमित था किन्तु 1907 में सूरत विभाजन के बाद यहां भी नरम दल के आन्दोलनकारियों ने उग्रवाद का रास्ता पकड़ लिया और जगह–जगह सरकारी दफ्तरों, डाकघरों, रेलवे पटरियों में तोड़–फोड़ करने शुरू कर दिया।[8] कई जगह अंग्रेजी सरकार के सिपाहियों

के साथ इनकी झड़प हो गई। जामताड़ा व देवघर में उच्च विद्यालयों में तालाबन्दी की गई शराब निषेध आन्दोलन भी चलाया गया। इस प्रकार स्वदेशी आन्दोलन ने संथाल परगना के जन समुदायों में राष्ट्रीय जागरूकता लाने का काम किया।

संदर्भ

1. देउस्कर, पं0 सखाराम गणेश. (1990). 'देशेर कथा'. 'एशियाटिक सोसाइटी'।
2. बनर्जी, सुरेन्द्रनाथ. ए नेशन इन मेकिंग. पृष्ठ **228.**
3. वही. पृष्ठ **230.**
4. झा, पं0 विनोदानंन्द. स्मृति ग्रंन्थ।
5. कुमार, उमेश. 'वतनपरस्त' बैकुण्ठ नाथ झा एवं उमेश कुमार. मातृ बहान मुक्ति संग्राम में संथाल परगना।
6. ओमैली, एल0एस0एस0. आई0सी0एस0. 'बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स' संथाल परगना।
7. वही.
8. दत्त, डॉ0 के0के0. बिहार में स्वातंत्रय आंदोलन का इतिहास. भाग–1.